हिन्दी विभाग

स्नातक तृतीय (III)

पत्र संख्या - 04

* हिन्दी नाटक के विकासक्रम को रेखांकित कीजिए ?

हिन्दी में नाटक साहित्य का उद्भव कब से माना जाए, इस पर विद्वानों में मतभेद है। डॉ० दशरथ ओझा ने अपने अनुसन्धान में संवत 1289 में लिखित 'गय सुकुमाल रास' को हिन्दी का प्रथम उपलब्ध नाटक माना है। भारतेन्दुजी ने अपने पिता गोपालचंद द्वारा लिखे 'नहुष' नाटक (सन् 1841-ई) को हिन्दी का प्रथम नाटक माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विश्वनाथ सिंह द्वारा रचित नाटक 'आनन्द रघुनंदन' को हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक स्वीकार किया है। डॉ० सोमनाथ गुप्त, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, बाबू गुलाब राय आदि विद्वानों ने 'रघुनन्दन' को हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक स्वीकार किया है। डॉ० दशरथ ओझा ने इसे संस्कृत शैली का प्रथम हिन्दी नाटक घोषित किया है। डॉ० विजयेन्द्र स्नातक तथा डॉ० कृष्णलाल ने 'नहुष' को हिन्दी का प्रथम मौलिक नाटक मान लिया है। डॉ० स्नातक के शब्दों में - गोपाल चन्द्र कृत 'नहुष' ही हिन्दी का प्रथम नाटक है" इसके अतिरिक्त हिन्दी

में मैथिली नाटक, (गोविन्द का नल-चरित नाटक, विद्यापति का गोरक्ष-विजय, रामदास झा का आनन्द विजय नाटक, देवानन्द का उषा हरण, रमापति उपाध्याय का रुक्मिणी हरण, उमापति उपाध्याय का पारिजात हरण आदि) रास-लीला नाटक (नन्ददास जी का गोवर्धन लीला एवं श्याम सगाई लीला) एवं पद्य-बद्ध नाटक (हृदय राम का रामायण महानाटक, हनुमन्नाटक, बनारसीदास का समयसार नाटक, गुरु गोविन्द सिंह का चंडी चरित, यशवन्त सिंह का प्रबोध-चन्द्रोदय, नेवाज का शकुन्तला नाटक आदि) भी उपलब्ध होते हैं किन्तु इन्हें हम विशुद्ध हिन्दी के नाटक स्वीकार नहीं करते हैं।

हिन्दी में नाटक के स्वरूप का समुचित विकास आधुनिक युग के आरंभ से होता है सन् 1850 से अब तक के नाटक साहित्य को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(क) भारतेन्दु युग (सन् 1850 से 1900 ई०)

(ख) प्रसाद युग (सन् 1900 से 1930 ई०)

(ग) प्रसादोत्तर युग (सन् 1930 से अब तक)

(क) हिन्दी नाटकों के वास्तविक जन्मदाता या प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही हैं इनके पहले संस्कृत साहित्य में नाटक प्रचुर मात्रा में लिखे जाते थे।

भारतेन्दु युग में नाटक के उदय का एक कारण यह है कि आधुनिक युग के आरंभ में अंग्रेजीराज्य के शोषण और अत्याचारों से जन-चेतना का जब उदय हुआ, तो परिणामतः नाटक इस जन-चेतना का वाहक बनकर साहित्य-क्षेत्र में उतरा। इस युग में नाटक के उदय का एक कारण यह भी माना जा सकता है कि इस युग के साहित्यकार नई युग-चेतना का प्रचार करने के लिए नाटक को विशेष रूप से नाटक के एक अंश 'प्रहसन' को साधन बनाते थे। प्रहसन के माध्यम से अपनी बात व्यंग्य और हास्य के आवरण में आसानी से व्यक्त की जाती है। यही कारण है कि इस युग में प्रहसन पर्याप्त मात्रा में लिखे गए।

(ख) प्रसाद युग :- हिन्दी नाटक को साहित्यिक भूमिका प्रदान करने का प्रयास सर्वप्रथम भारतेन्दुजी ने किया। भारतेन्दु द्वारा स्थापित की गई नाटक और रंगमंच की परम्परा को ही जयशंकर प्रसाद जी ने आगे बढ़ाते हुए उसे नया जीवन और नई दिशा प्रदान की। भारतेन्दु के पश्चात् प्रसाद जैसा सर्वांगीण, प्रतिभाशाली, रचनात्मक व्यक्तित्व सम्पन्न दूसरा कोई भी कलाकार हिन्दी में उत्पन्न नहीं हुआ। हिन्दी नाटकों के विकास का जो आरंभ भारतेन्दुयुग में हुआ था वह प्रसाद युग में अपने पूर्ण उत्कर्ष को पहुँचा

(ग) प्रसादोत्तर युग :-

प्रसादोत्तर काल से लेकर आज तक का हिन्दी नाटक कई धाराओं में विभक्त होकर अपनी विकास की यात्रा तय कर रहा है। इस युग में ऐतिहासिक, पौराणिक, समस्या प्रधान, प्रतीकवादी, क्रान्तिवादी चेतना से अनुप्राणित सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित, राजनीतिक चेतना से अनुप्राणित, गीतिनाट्य, व्यंग्य नाटक तथा विसंगत नाटक लिखे जा रहे हैं।

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (सहायक प्राध्यापक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० न० - 8292227104।
इमेल - benamkumar13@gmail.com

दिनांक
06/11/2020